INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 7, July 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

संगम (कुंभ) मेला क्षेत्र प्रयागराज में जल, स्वच्छता और साफ–सफाई से संबंधित बीमारियाँ

डॉ. बिपिन कुमार मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर (भूगोल) किसान डिग्री कॉलेज गोण्डा

प्रस्तावना –

कुंभ मेले की परंपरा का संबंध समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से माना जाता है। पौराणिक कथाओं के मुताबिक भगवान विष्णु अमृत से भरा कुंभ (बर्तन) लेकर जा रहे थें कि असुरों से छीना–झपटी में अमृत की चार बूंदें गिर गई थीं। मान्यता है कि देवताओं और असुरों के बीच अमृत कलश को लेकर हुए संघर्ष के दौरान अमृत की कुछ बूंदें पृथ्वी पर चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैनकृपर गिरी थीं। इन स्थानों में प्रयागराज को विशेष महत्व प्राप्त है, क्योंकि यहाँ पवित्र गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम होता है, जिसे त्रिवेणी संगम कहा जाता है।

प्रयागराज में आयोजित धार्मिक सभाओं का सबसे प्राचीन वर्णन 7वीं शताब्दी के चीनी यात्री Xuanzang (ह्वेन त्सांग) के यात्रा–वृत्तांत में मिलता है। उन्होंने उल्लेख किया है कि सम्राट भ्तींअंतकींदं संगम तट पर समय–समय पर विशाल धार्मिक और दान समारोह आयोजित करते थे, जिनमें वे अपनी संपत्ति का बड़ा हिस्सा दान कर देते थे।

प्राचीन काल से प्रयाग में माघ मेले का आयोजन होता रहा है। बाद के समय में धार्मिक ग्रंथों, विशेष रूप से प्रयाग महात्म्य, ने संगम स्नान के महत्व और उससे जुड़े अनुष्ठानों को व्यापक मान्यता प्रदान की। ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, 19वीं शताब्दी से पहले ''कुंभ'' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से हरिद्वार के मेले के लिए किया जाता था। बाद में प्रयागराज के पुरोहित समुदायों और औपनिवेशिक प्रशासन के सहयोग से यहाँ एक अधिक संगठित और विशाल तीर्थ आयोजन विकसित हुआ, और 1870 में प्रयागराज का पहला सुव्यवस्थित कुंभ मेला आयोजित किया गया।

20वीं और 21वीं शताब्दी में कुंभ मेले का स्वरूप अभूतपूर्व रूप से विस्तृत हुआ। विशेष रूप से 2019 के प्रयागराज कुंभ में करोड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया, जिससे यह दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक बन गया और कई विश्व रिकॉर्ड भी स्थापित हुए।

कुंभ मेला क्षेत्र (प्रयागराज) की स्थिति एवं विस्तार

कुंभ मेला क्षेत्र प्रयागराज जनपद उत्तर प्रदेश राज्य में गंगा यमुना एवं सरस्वती नदी के संगम तट पर स्थित है विश्व के मानचित्र में प्रयागराज कुंभ मेला क्षेत्र 25.25 से 25.43 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा 81.53 से 81.88 पूर्वी देशांतर के मध्य अवस्थित है

भारत

उत्तर प्रदेश

प्रयागराज

कुंभ मेला क्षेत्र

कुंभ मेला के दौरान इसका क्षेत्रफल 4000 हेक्टेयर से अधिक में फैला होता है इस शुभ अवस्थित प्रबंधन के लिए लगभग 20 से 25 प्रशासनिक सेक्टर में विभाजित किया जाता है यह क्षेत्र समुद्र तल से लगभग 98 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और अकबर के किले के पूर्वी प्राचीर से होकर गुजरता है इस विशाल क्षेत्र में करोड़ों लोगों की भीड़ के प्रबंधन के लिए सैकड़ो किलोमीटर की अस्थाई सड़के, पीपा पुल, पुलिस चौकियां, स्वास्थ्य केंद्र और बिजली पानी की व्यवस्था की जाती है

कुंभ मेला क्षेत्र में जल प्रदूषण की स्थिति

प्रयागराज की पवित्र नदियों में प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी खतरे बढ़ रहे हैं अध्ययन में पाया गया है कि प्रयागराज में गंगा और यमुना नदियाँ खतरनाक रूप से प्रदूषित हैं। शोधकर्ता के शोध में इस प्रदूषण का कारण अनुपचारित सीवेज, औद्योगिक अपशिष्ट और कृषि अपवाह को बताया गया है, जिससे इन नदियों पर निर्भर लाखों लोगों के स्वास्थ्य के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है।

मानव स्वास्थ्य

अच्छा स्वास्थ्य ही मानव का सबसे बड़ा धन होता है। रोग अर्थात अस्वस्थ होना। यह चिकित्साविज्ञान का मूलभूत संकल्पना है। प्रायः शरीर के पूर्णरूपेण कार्य करने में किसी प्रकार की कमी होना 'रोग' कहलाता है। जिस व्यक्ति को रोग होता है उसे 'रोगी' कहते हैं। हिन्दी में 'रोग' को 'बीमारी' , 'रुग्णता', 'व्याधि' और 'विकार' भी कहते हैं।

प्रयागराज (इलाहाबाद) कुंभ मेला क्षेत्र में मुख्य रूप से मौसमी, संक्रामक (Communicable) और जल–वायु जनित बीमारियां पाई जाती हैं। मौसम के बदलाव और गंगा–यमुना के तटीय इलाकों में बाढ़ के कारण स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ जाती हैं चिकित्सा की दृष्टि से विविध प्रकार की बीमारियाँ और रोग समूह, जो मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में गरीबी में रहने वाली आबादी को असमान रूप से प्रभावित करते हैं। इन्हें उपेक्षित कहा जाता है क्योंकि इन्हें अन्य अधिक चर्चित संक्रमणों और स्वास्थ्य स्थितियों की तुलना में कम दृश्यता, अनुसंधान सहायता और वित्त पोषण प्राप्त होता है।

प्रयागराज (इलाहाबाद) कुंभ मेला क्षेत्र में कुछ बीमारियाँ गंभीर रोग और मृत्यु का कारण बन सकती हैं, जबकि अन्य दीर्घकालिक पीड़ा और विकलांगता का कारण बन सकती हैं, साथ ही प्रयागराज (इलाहाबाद) कुंभ मेला क्षेत्र में प्रभावित व्यक्तियों के कलंक और सामाजिक बहिष्कार का कारण भी बन सकती हैं। ये बीमारियाँ मानवीय, सामाजिक और आर्थिक रूप से भारी बोझ डालती हैं। पेशवाई और पूजा के दौरान जब लाउडस्पीकर पर तेज धार्मिक गीत बजाए जाते थे, तो उच्च स्तर का शोर दर्ज किया गया था । कुंभ मेला क्षेत्र में 55 प्रतिशत लोगों ने शोर से अपनी नींद प्रभावित होने की सूचना दी और 75 प्रतिशत ने ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई की शिकायत की।

दूषित पानी प्रयागराज (इलाहाबाद) कुंभ मेला क्षेत्र में एक बड़ी समस्या है। गंदा पानी पीने की वजह से बैक्टीरियल गैस्ट्रो एंटेराइटिस , हैजा, टाइफाइड और पेचिश जैसी गंभीर बीमारियां हो रही हैं। प्रयागराज (इलाहाबाद) कुंभ मेला क्षेत्र में प्रमुख बीमारियों में **दस्त, हैजा, टाइफॉइड, पीलिया, पोलियो मलेरिया** और **डेंगू** बीमारियां जानलेवा साबित हो रही हैं। यह बीमारी अक्सर E.coli, Salmonella, Shigella और Campylobacter जैसे बैक्टीरिया के कारण होती है।

प्रमुख बीमारियाँ (Diseases related to cleanliness)

दस्त (Diarrhea) और हैजा (Cholera):

विब्रियो कोलेरी (V. cholerae) नामक जीवाणु हैजा का कारण बनता है। प्रयागराज कुंभ मेला क्षेत्र में V. cholerae गर्म, हल्के नमकीन पानी में पाया जाता है। जब कई दिनों तक निरंतर रहने वाले कुछ लोग V. cholerae से दूषित पानी पीते हैं या भोजन करते हैं, तो यह जीवाणु आपकी छोटी आंत की दीवारों से चिपक जाता है । वहां, यह विषाक्त पदार्थ छोड़ता है जिससे दस्त हो जाते हैं। शोध के दौरान संगम मेला क्षेत्र में लगभग 10 प्रतिशत दस्त के मरीज देखने को मिले

संक्रामक और श्वसन संबंधी बीमारियां (Respiratory Illnesses)

संक्रामक और श्वसन संबंधी बीमारियाँ (Respiratory Illnesses) वे संक्रमण हैं जो मुख्य रूप से नाक, गले, वायुमार्ग और फेफड़ों को प्रभावित करते हैं। ये बीमारियाँ मुख्य रूप से वायरस, बैक्टीरिया या कवक के कारण होती हैं और खांसने, छींकने या संक्रमित सतहों को छूने से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी से फैलती हैं प्रयागराज कुंभ मेला क्षेत्र में बदलते मौसम और भीड़–भाड़ के कारण सांस से जुड़ी समस्याएं सबसे अधिक लगभग 35 प्रतिशत होती हैं

टाइफॉइड (Typhoid):

टाइफाइड साल्मोनेला टाइफी बैक्टीरिया से फैलने वाली एक गंभीर बीमारी है, जिसकी रोकथाम मुख्य रूप से साफ–सफाई, शुद्ध खान–पान और टीकाकरण (Vaccination) पर निर्भर करती है

लक्षणः तेज बुखार, सिरदर्द, कमजोरी और पेट में दर्द।

पीलिया (Jaundice / Hepatitis):

पीलिया एक ऐसी स्थिति है जिसमें आपकी त्वचा, आंखों का सफेद भाग और श्लेष्म झिल्ली (जैसे नाक और मुंह के अंदर का भाग) पीले पड़ जाते हैं। कई चिकित्सीय स्थितियां पीलिया का कारण बन सकती हैं, जैसे हेपेटाइटिस, पित्त की पथरी और ट्यूमर। आमतौर पर, आपके डॉक्टर द्वारा आपकी मुख्य चिकित्सीय स्थिति का इलाज करने के बाद पीलिया ठीक हो जाता है। हेपेटाइटिस ए या ई (Hepatitis A & E) वायरस से संक्रमित पानी पीने से होता है।

मलेरिया और डेंगू

प्रयागराज कुंभ मेला क्षेत्र में जल भराव एवं बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में मच्छर बहुत तेजी साथ पनपते हैं मलेरिया एक जानलेवा पैरासाइट जनित रोग है जो संक्रमित मच्छर के काटने से फैलता है। इसके लक्षण 10–15 दिन बाद दिखते हैं। समय पर इलाज और बचाव बेहद जरूरी है। वहीं मलेरिया और डेंगू में एक अंतर होता है, जो आपको इसी ब्लॉग में पढ़ने को मिल जाएगा। घर के आसपास या कुलर में जमा साफ पानी मच्छरों (मलेरिया के लिए एनाफिलीज और डेंगू के लिए एडीज) के पनपने का मुख्य कारण है।

लक्षणः तेज बुखार, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द, प्लेटलेट्स का गिरना।

त्वचा रोग (Skin Infections):

त्वचा रोग ऐसी स्थितियाँ हैं जो आपकी त्वचा को प्रभावित करती हैं। इन रोगों के कारण त्वचा पर चकत्ते, सूजन, खुजली या अन्य परिवर्तन हो सकते हैं। कुछ त्वचा रोग आनुवंशिक हो सकते हैं, जबकि अन्य जीवनशैली संबंधी कारकों के कारण होते हैं। त्वचा रोग के उपचार में दवाएँ, क्रीम या मलहम, या जीवनशैली में बदलाव शामिल हो सकते हैं। शरीर की नियमित साफ–सफाई न करने से फंगल इन्फेक्शन और खाज–खुजली की समस्या होती है। अधिक गर्मी और चिपचिपा मौसम के कारण प्रयागराज क्षेत्र में चर्म से संबंधित भारी मात्रा में रोगी पाए जाते हैं

पोलियो (Polio)–

पोलियो एक दुर्बल करने वाली और जानलेवा बीमारी है। यह एक वायरस है जो मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी को प्रभावित कर सकता है, और पोलियो से लकवा या मृत्यु भी हो सकती है। यह दूषित पानी के माध्यम से फैलने वाला एक गंभीर वायरल संक्रमण है संगम क्षेत्र में पोलियो के मरीज अब लगभग बहुत कम देखने को मिलते हैं

रोगियों का प्रबंधन और उपचार

प्रयागराज कुंभ मेला क्षेत्र में स्वच्छ पानी पीना और साफ पानी और साबुन से हाथ धोना हैजा के खतरे को कम करने के सर्वोत्तम तरीके हैं। हैजा के इलाज में निर्जलीकरण से बचने के लिए खूब सारा तरल पदार्थ पीना या नसों के माध्यम से तरल पदार्थ चढ़ाना शामिल है। खाना बनाने और खाने से पहले तथा शौचालय का उपयोग करने के बाद साबुन से अच्छी तरह हाथ धोएं हमेशा साफ, सुरक्षित और उबला हुआ पानी पीने की आदत डालें खुले में बिकने वाले बासी, कटे हुए फल या दूषित खाद्य पदार्थों से बचें शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स का स्तर बनाए रखने के लिए ओआरएस (ORS) का घोल पीते रहें

स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल, कमला नेहरू मेमोरियल हॉस्पिटल, मोतीलाल नेहरू (कल्विन) अस्पताल, हेल्थ सिटी हॉस्पिटल , पारस हॉस्पिटल इसके अतिरिक्त, मेला प्राधिकरण द्वारा खुद मेला क्षेत्र के भीतर कई अस्थायी अस्पताल और चिकित्सा शिविर भी स्थापित किए जाते हैं यहां के स्वास्थ्य सेवा प्रदाता कभी–कभी आपको बेहतर महसूस कराने के लिए डॉक्सीसाइक्लिन, एरिथ्रोमाइसिन या एजिथ्रोमाइसिन जैसी एंटीबायोटिक्स भी लिखते हैं। पानी, सूप और ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन (जैसे पेडिलाइटो या सेरालाइटो) आपको हाइड्रेटेड रखने के लिए सबसे अच्छे विकल्प हैं। स्पोर्ट्स ड्रिंक, फलों के रस और सोडा से बचें इनमें चीनी की मात्रा अधिक होने से दस्त और बढ़ सकते हैं। आपको दस्त रोकने वाली दवाइयाँ भी नहीं लेनी चाहिए।

निष्कर्ष

प्रत्येक व्यक्ति को अपने मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को उतना महत्व देना चाहिए जितना वह अपने शारीरिक स्वास्थ्य को देता है। स्वच्छता हमारे जीवन से जुड़ी हुई एक अच्छी आदत है। जिसे हर किसी को अपने जीवन में अपनाना चाहिए, क्योंकि स्वच्छता से मनुष्य के जीवन को मानसिक और शारीरिक रूप से बहुत से लाभ होते हैं। अच्छा स्वास्थ्य किसी के भी जीवन को बेहतर बना सकता है। क्योंकि अच्छे स्वास्थ्य का मूल मंत्र स्वच्छता है। स्वच्छता का सीधा प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है। यदि साफ सफाई नहीं होगी तो हमारा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रह पाएगा। स्वस्थ हम तभी रह सकते हैं, जब हम अपने आसपास की गंदगी को दूर कर बीमारियों से बचकर अच्छा जीवन जी सकते हैं। सभी लोगों को स्वच्छता को अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझनी चाहिए। और अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने से कभी भी हिचकिचाना नहीं चाहिए। क्योंकि स्वच्छता एक स्वस्थ जीवन की कुंजी है।

इसीलिए भारत सरकार द्वारा आज के समय में गांधीजी के आदर्शों पर कायम होकर स्वच्छता अभियान निकाला गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को साफ सफाई और स्वच्छता के महत्व को समझाना है। स्वच्छता एक बहुत ही अच्छा आदत है और एक पुण्य का भी काम है, जिसे जीवन का स्तर बढ़ाने के लिए एक बड़ी जिम्मेदारी के रूप में हर एक व्यक्ति को इसका अनुसरण करना चाहिए। हमेशा से हम सुनते आए हैं कि हमारे जीवन में स्वच्छता और पवित्रता होना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि जहां साफ सफाई होती है, वहीं पर ईश्वर निवास करते हैं। इसीलिए आज के समय में लोगों को साफ सफाई को एक जिम्मेदारी के रूप में अपनाना चाहिए और अपने घर को और आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। इस आदत को लोगों को खुद भी अपनाना चाहिए और अपने बच्चों को भी अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए ताकि हमारा आने वाला जनरेशन एक स्वच्छ और शुद्ध वातावरण में जी सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- R. A. Meyers (ed.), *Encyclopedia of Sustainability Science and Technology*, © Springer Science+Business Media, LLC, part of Springer Nature 2021
- Fenwick A (2006) Waterborne infectious diseases – could they be consigned to history? Science 313:1077–1081
- World Health Organization (2018) Guidelines on sanitation and health. World Health Organization, Geneva
- World Health Organization (2019) Cholera [Internet]. Cholera fact sheet. [cited 2021 Mar 8]. Available from: https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/cholera
- Brown J, Cairncross S, Ensink JHJ (2013) Water, sanitation, hygiene and enteric infections in children. Arch Dis Child 98:629–634

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.